गुरुगोविंद सिंह

गुरुगोविंद सिंह का जन्म बिहार की राजधानी पटना में सन् 1666 में हुआ । पटना में ही माता गुजरी देवी ने उन्हें गुरुमुखी सिखाई । वे सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे । उनका मूल नाम गोविंद राय था । 1699 ई० में आनंदपुर के केशवगढ़ नामक स्थान पर दयाराम, धर्मदास, मुहमचंद, साहिबचंद, हिम्मत इन पाँच सिखों को मृत्युंजयी बनाकर 'सिंह' बनाया और गोविंद राय से गोविंद सिंह बने । उनकी प्रतिभा शास्त्र से लेकर शस्त्र तक दिखलाई पड़ती है । बचपन में ही उन्होंने बिहार की अपनी भाषा के अलावा बाँग्ला भी सीख ली थी । वे गुरु तेगबहादुर के शिष्य थे और औरंगजेब के समकालीन । औरंगजेब की कट्टरता का उन्होंने पुरजोर विरोध किया । शक्ति संघटन के लिए उन्होंने हिमालय की पहाड़ियों को अपना निवास स्थान बनाया तथा बीस वर्षों की ऐकांतिक साधना की । इस ऐकांतिक साधना के अनेक शुभ परिणाम निकले । उन्होंने फारसी और संस्कृत के ऐतिहासिक-पौराणिक ग्रंथों का विशद् अध्ययन किया । घुड़सवारी, तीरंदाजी में असाधारण निपुणता प्राप्त की, आखेट विद्या में दक्षता प्राप्त की और कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास किया । वे भलीभाँति समझ चुके थे कि औरंगजेब के विरुद्ध तबतक नहीं लड़ा जा सकता, जबतक औरंगजेब की कट्टरता का विरोध करने वाले को धार्मिक स्तर पर जागरूक न किया जाए । इसी उद्देश्य की सफलता के लिए उन्होंने 'खालसा पंथ' की स्थापना की, जो उनके जीवन की सबसे बड़ी सफलता है । 1708 ई० में उनका देहांत हो गया ।

गुरुगोविंद सिंह की प्रमुख कृतियाँ हैं - 'जापु साहिब', 'अकाल उसतति', 'विचित्र नाटक', 'चंडी चरित्र', 'ज्ञान प्रबोध', 'शास्त्रनाममाला', 'चौपाई' । 'जफरनामा' 1706 ई० में औरंगजेब को लिखा गया पत्र है जो खूब प्रसिद्ध हुआ । हिंदी कवियों द्वारा उन्होंने पंजाब में वीर रस के काव्य का प्रणयन कराया और स्वयं भी काव्य की रचना की । गुरुगोविंद सिंह की वाणी में शांत एवं वीर रस की प्रधानता है । परमात्मा की स्तुति में उन्होंने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को विषय बनाया तथा युद्धों के वर्णन में वीर और रौद्र रस को प्रधानता दी । उनकी कृतियों में उपमा, रूपक और दृष्टांत अलंकारों का बाहुल्य है । उनकी भाषा प्रधानतया पंजाबी मिश्रित ब्रज है, किंतु अरबी, फारसी और संस्कृत शब्दों के प्रयोग भी खूब हुए हैं । उनकी भाषा में सरिता का प्रवाह एवं निर्झर का कलकल निनाद है । उनकी समस्त वाणी में परमात्मा तथा देश की भक्ति के स्वर मुखरित हुए हैं ।

प्रथम छंद में तमाम भेदों के पीछे मनुष्य की अंतर्वर्ती एकता की प्रतिष्ठा की गई है । समाज में ऊपरी विभेदों के भीतर आंतरिक एकता की अनुभूति तक इस पद की व्याप्ति है । कवि मानवमात्र की एकता का पक्षधर है । छंद के उत्तरार्ध में वह एकत्वपूर्ण आत्मबोध के कारण ईश्वर की एकता, गुरु, स्वरूप और ज्योति की एकता की प्रतिष्ठा करता है ।

द्वितीय छंद में परमात्मा की विश्वरूप के स्वरूप में पहचान की गई है । यह अजर-अमर, व्यापक और बहुरूपी है । इसी विश्वरूपी परमात्मा से सबकुछ उत्पन्न हुआ है और इसी में लीन होगा ।

(१)

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी, कोऊ जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो ।
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो ।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ।
एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ।

(२)

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे,
न्यारे न्यारे ह्वै कै फेरि आगमै मिलाहिंगे ।
जैसे एक धूरते अनेक धूर धूरत हैं,
धूरके कनूका फेर धूरही समाहिंगे ।
जैसे एक नदते तरंग कोट उपजत हैं,
पान के तरंग सब पानही कहाहिंगे ।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोत्तम कृति के रूप में रचा है । कवि के अनुसार मनुष्य वस्तुतः एक ही ईश्वर की संतान है, उसे खेमों में बाँटना उचित नहीं है । इस क्रम में उन्होंने किन उदाहरणों का प्रयोग किया है ?
2. कवि ने मानवीय संवेदना को मनुष्यता के किस डोर में बाँधे रखने की बात कही है ?
3. गुरुगोविंद सिंह के इन भक्ति पदों के माध्यम से सामाजिक कलह और भेदभाव को कम किया जा सकता है ? पठित पद से उदाहरण देकर समझाएँ ।
4. भाव स्पष्ट करें –
   (क) 'तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
   ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ।'
   (ख) 'एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
   एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ।'

कविता के आस-पास

1. सिख धर्म के सभी गुरुओं का नाम क्रम से लिखें ।
2. गुरुगोविंद सिंह का जन्म कहाँ हुआ था ? उनका बचपन कहाँ बीता ? उनके प्रारंभिक जीवन के बारे में एक लेख लिखें ।
3. गुरुगोविंद सिंह सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे । उन्होंने सिखों के लिए पाँच ककार की प्रतिष्ठा की । उन पाँचों ककारों के नाम और महत्त्व अपने शिक्षक से पूछिए ।
4. निराला की एक कविता है 'जागो फिर एक बार' जिसमें उन्होंने गुरुगोविंद सिंह का स्मरण किया है । इस कविता को अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर उसका पाठ करें ।
5. गुरुगोविंद सिंह के जीवन-वृत्त से संबंधित तथ्य एकत्र कर उनके ऐतिहासिक महत्त्व पर विचार करें ।
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक पुस्तक लिखी है 'सिख गुरुओं के पुण्य स्मरण' । यह पुस्तक अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें और सिख धर्म के प्रादुर्भाव पर एक निबंध लिखें ।
7. अपने वर्ग के सहपाठियों के साथ पटना साहिब की यात्रा कीजिए और वहाँ हरमंदिर साहब के दर्शन कर एक रिपोर्ताज तैयार कीजिए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   आग, संन्यासी, गुरु

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
एक, आग, भूत, प्रगट, उपज, संन्यासी
3. संन्यासी का संधि विच्छेद करें ।
4. दोनों पदों का आज की हिंदी में रूपांतरण कीजिए ।

शब्द निधि

कोऊ : कोई
मुंडिया : मुंडित सिर
जतियन : यति, योगी
तुरक : तुर्क
राफजी : वह व्यक्ति जो अपने स्वामी को पीड़ित देखकर भाग जाए
इमाम : इस्लाम धर्म के पुरोहित, पुजारी
साफी : शुद्ध करनेवाला
मानस : मनुष्य
करीम : कृपा करनेवाला, भगवान
सोई : वही
राजक : राजा, राज करनेवाला
रहीम : जो दया करे
सेव : सेव्य, जिसकी सेवा की जाए, सेवा करने योग्य
कनूका : कण
कोट : करोड़
ते : से
न्यारे : निराले, अलग
धूर : धूलि
नदते : नदी
पान : पानी
कहाहिंगे : कहे जाएँगे
अभूत : जो भूत नहीं है